Deg-2
HIS. p-15

मालवा का विस्तार

चित्तौर पर विजय प्राप्त करने के बाद अलाउद्दीन ने अपना ध्यान मालवा की ओर मोड़ा जो बहुत से उन्नत नगरो वाला एक समृद्ध एवं विशाल प्रदेश था। इल्तुतमिश और बाद में जलालुद्दीन ने मालवा पर आक्रमण किया था तथा वहाँ से काफी धन लूटा था, किन्तु इसे दिल्ली सल्तनत के प्रत्यक्ष शासन में लाने का संभवतः कोई प्रयास नही किया गया। इस पर अलाउद्दीन द्वारा प्रत्यक्ष शासन स्थापित करने के दो उद्देश्य थे: गुजरात जानेवाले मार्ग पर अपना नियंत्रण कायम करना एवं दक्षिण की ओर जाने का मार्ग।

सन 1305 ई० में ऐनुल मुल्क मुल्तानी को मालवा जीतने का दायित्व सौंपा गया। मालवा के राय के पास 30-40 हजार घुड़सवार सैनिक तो थे किन्तु वे तुर्की सेना के सामने टिक नही पाए। राय का पीछा किया गया। वह भागकर उज्जैन से मांडू चला गया। तुर्की सेना ने मांडू में उसे पराजित किया तथा मार डाला। राजस्थान के अतिरिक्त समस्त मालवा को दिल्ली सल्तनत

P.T.O

में सम्मिलित कर लिया गया और ऐनुल मुल्क को वहाँ का हाकिम नियुक्त किया गया।

इस प्रकार बंगाल को छोड़कर, जो गियासुद्दीन तुगलक के शासनकाल (1320–24) ई० तक स्वतंत्र बना रहा, समस्त उत्तरी भारत दिल्ली के सुल्तानों के नियंत्रण में आ गया। गियासुद्दीन के शासनकाल के दौरान उड़ीसा पर भी आक्रमण किया गया, किया गया और उसे अधीन किया गया, किन्तु उसे दिल्ली सल्तनत में सम्मिलित नहीं किया गया।